मैं भाग्य में बहुत विश्वास करता हूं और देखता हूं कि जितना कठिन काम मैं करता हूं, उतना ही सौभाग्य प्राप्त करता हूं।

-थॉमस जेफरसन

साइंस कम्युनिकेशन

बेहतर मौकों की उम्मीद का कोर्स

साइंस कम्युनिकेशन के क्षेत्र में प्रशिक्षित लोगों की आज जबरदस्त मांग है क्योंकि न्यूज फील्ड में विज्ञान और इसके टेक्निकल शब्दों को सही तौर पर समझने वाले लोगों की संख्या काफी कम है। इस फील्ड में वही सफल हो सकता है जो विज्ञान की दुनिया रुचि रखता हो। चूंकि विज्ञान हमारी जिंदगी से काफी गहरे तक जुड़ा है, इसलिए इस विषय की बारीक बातों की जानकारी विज्ञान से जुड़ा जर्नलिस्ट या राइटर ही दे सकता है

यदि आपकी साइंस में रुचि है और आप लोगों से अपनी बात शेयर करना चाहते हैं तो साइंस कम्युनिकेशन के क्षेत्र में आप करियर बना सकते हैं। साइंस कम्युनिकेटर का रोल विज्ञान और उसकी भाषा को सामान्य लहजे में बयां करने का है। यानी साइंस कम्युनिकेटर वैज्ञानिक खोज और उससे जुड़े टेक्निकल लैंग्वेज के बीच सेतु का काम करता है। आज के दौर में सिर्फ भारत में ही नहीं बल्कि पूरी दुनिया में साइंस कम्युनिकेटर की मांग जबरदस्त रूप से बढ़ी है क्योंकि विज्ञान की अहमियत हर रूप में सामने आ रही है।

एक ओर जहां अंतरिक्ष विज्ञान हर दिन नयी संभावनाओं की तलाश कर रहा है, वहीं समुद्र विज्ञान नई गहराइयों में जाकर समुद्री जीवन के नये पहलुओं को सामने ला रहा है। मौसम विज्ञान किस तरह हमें प्राकृतिक आपदाओं से लेकर बारिश की जानकारी देता है, यह किसी से अछूता नहीं है। इतना ही नहीं, भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान, जीव विज्ञान, वनस्पति विज्ञान आदि में भी नित नयी खोजें हो रही हैं। साथ ही, उन्हें जानने-समझने में आम लोगों की रुचि काफी बढ़ रही है।

इस फील्ड में प्रशिक्षित साइंस जर्नलिस्ट, कम्युनिकेटर, राइटर और रिपोर्टर की भारी मांग है। इस फील्ड में वही सफल हो सकता है जो विज्ञान की दुनिया में गोते लगाने में आनंद प्राप्त करता है। चूंकि विज्ञान हमारी जिंदगी से काफी गहरे से जुड़ा है, इसलिए इस विषय की बारीक बातों की जानकारी विज्ञान से जुड़ा जर्नलिस्ट या राइटर ही दे सकता है। भारत में ही साइंस जर्नलिस्ट को प्रशिक्षित करने का काम विभिन्न संस्थानों के अलावा केंद्र सरकार के अधीन कार्य कर रहे विज्ञान और तकनीक विभाग ने आरंभ किया है। इसके अलावा और भी कई संस्थान हैं जहां शॉर्ट टर्म और लांग टर्म कोर्स की पढ़ाई होती है।

देवी अहिल्याबाई विश्वविद्यालय, इंदौर के तहत चल रहे विभाग सेंटर ऑफ साइंस कम्युनिकेशन दो वर्षीय मास्टर ऑफ साइंस प्रोग्राम साइंस कम्युनिकेशन में संचालित करता है। इसी तरह लखनऊ स्थित इंस्टीट्यूट ऑफ मास कम्युनिकेशन इन साइंस एंड टेक्नोलॉजी भी मास्टर डिग्री का कोर्स छात्रों को उपलब्ध कराता है। इसके अलावा, नेशनल काउंसिल फॉर साइंस म्यूजियम भी बिट्स, पिलानी के साथ कोलैबोरेशन कर कोलकाता में दो वर्षीय साइंस कम्युनिकेशन का कोर्स चलाता है। इंडियन कम्युनिकेशन साइंस सोसाइटी, लखनऊ में इससे संबंधित सर्टिफिकेट कोर्स भी है। भोपाल स्थित माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता विश्वविद्यालय में भी इस विषय से संबंधित डिग्री संचालित की जाती है।

कोर्स

शॉर्ट-टर्म कोर्स एक से दो हफ्ते के होते हैं जबकि मीडियम टर्म कोर्स की अवधि एक-छह माह की होती है। इसमें ग्रेजुएशन के बाद एडमिशन लिया जा सकता है। साइंस कम्युनिकेशन में एक वर्षीय डिप्लोमा कोर्स भी विभिन्न संस्थानों में संचालित हो रहे हैं। साथ ही, मास्टर डिग्री करने के लिए अभ्यर्थी के पास स्नातक की डिग्री अवश्य होनी चाहिए।

संस्थान

नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस कम्युनिकेशन एंड इनफॉर्मेशन रिसोर्स (एनआईएससीएआईआर), नई दिल्ली
www.niscair.res.in

डिपार्टमेंट ऑफ जर्नलिज्म एंड साइंस कम्युनिकेशन, मदुरै कामराज विश्वविद्यालय, मदुरै

सेंटर ऑफ साइंस कम्युनिकेशन (सीएससी), देवी अहिल्याबाई विश्वविद्यालय, इंदौर
www.dauniv.ac.in

इंडियन साइंस कम्युनिकेशन सोसाइटी
www.iscos.org

इंस्टीट्यूट ऑफ मास कम्युनिकेशन इन साइंस एंड टेक्नोलॉजी, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ
www.lkouniv.ac.in

नेशनल काउंसिल फॉर साइंस म्यूजियम (एनसीएसएम), कोलकाता
www.ncsm.gov.in

माखनलाल चतुर्वेदी नेशनल यूनिवर्सिटी ऑफ जर्नलिज्म एंड कम्युनिकेशन, भोपाल
www.mcu.ac.in

गुण

इस फील्ड में आप तभी आगे बढ़ सकते हैं जब आप विज्ञान की बारीक चीजों से अवगत हों। मसलन रडार कैसे काम करता है, कौन-सी गैस का वातावरण पर किस तरह का प्रभाव पड़ता है, रोबोट किस तरह काम करते हैं या आर्टिफिशल इंटेलीजेंस क्या है आदि। विज्ञान विषय में कई शब्द ऐसे होते हैं जिनका इस्तेमाल आमतौर पर नहीं होता, इसलिए उन शब्दों को समझाने के लिए दूसरे शब्दों का इस्तेमाल करना पड़ता है। ऐसे में, आप टेक्निकल शब्दों के साथ-साथ आम भाषा के बीच जिस हद तक तारतम्य विठा पाएंगे, इस फील्ड में उतने ही सफल होंगे।

कार्य

साइंस कम्युनिकेशन से संबंधित कोर्स करने के बाद साइंस सेंटर, साइंस म्यूजियम एंड एक्जीविशन, साइंस ब्रॉडकास्ट, साइंस मैगजीन और प्रिंट पत्रकारिता में साइंस बीट पर कार्य कर सकते हैं। यदि आपको निजी संस्थानों में कार्य करना पसंद है तो आप किसी समाचारपत्र या न्यूज चैनल में बतौर साइंस रिपोर्टर कार्य कर सकते हैं। विज्ञान से जुड़ी पत्र-पत्रिकाएं भी काफी संख्या में प्रकाशित होती हैं, उनसे जुड़कर भी बतौर फ्रीलांसर काम कर सकते हैं। यदि आपको फीचर लेखन में मजा आता है तो विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं के लिए विज्ञान पर फीचर लेख लिख सकते हैं।

■ विनीत

विदेश शिक्षा

पीएचडी फेलोशिप फॉर इंटरनेशनल स्टूडेंट्स

आवेदन की अंतिम तिथि : 15 जुलाई, 2013

यदि आप जर्मनी के हेडेलबर्ग विश्वविद्यालय में अध्ययन करने के इच्छुक हैं तो आपको वहां पीएचडी में अध्ययन करने के दौरान फेलोशिप मिल सकती है। हर्टमूट हॉफमान-बर्लिंग इंटरनेशनल ग्रेजुएट स्कूल ऑफ मॉलिक्युलर एंड सेल्युलर बायोलॉजी (एचबीआईजीएस) हर साल दस छात्रों को विभिन्न विषयों के छात्रों को फेलोशिप देता है। तीन वर्षीय इस फेलोशिप के तहत 1,468 यूरो प्रति मास आर्थिक सहायता दी जाती है। जो भी छात्र आवेदन करना चाहते हैं, उनकी अंग्रेजी काफी अच्छी होनी चाहिए। जिन-जिन विषयों की पढ़ाई एचवीआईजीएस में होती है, उन्हीं विषयों के छात्रों को फेलोशिप सुविधा उपलब्ध है।

योग्यता

वे ही छात्र आवेदन करें जिनके पास यूनिवर्सिटी की डिग्री हो और उस डिग्री की मान्यता अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हो। डिग्री की मान्यता अभ्यर्थी के देश पर निर्भर करती है, वह मास्टर डिग्री या डिप्लोमा भी हो सकता है। अभ्यर्थियों से उम्मीद की जाती है कि पीएचडी के प्रोजेक्ट वर्क शुरू होने से पहले संबंधित सर्टिफिकेट जमा कर दें। इस फेलोशिप के लिए आवेदन ऑनलाइन ही किया जा सकता है।

अधिक जानकारी के लिए क्लिक करें : www.hbigs.uni-heidelberg.de/

टीडब्ल्यूएएस-यूएसएम पोस्ट डॉक्टोरल फेलोशिप प्रोग्राम

मलयेशिया स्थित सेन्स यूनिवर्सिटी के नेचुरल साइंसेज में पोस्ट डॉक्टोरल फेलोशिप प्राप्त करना चाहते हैं तो इसके लिए आवेदन कर सकते हैं। इस फेलोशिप की न्यूनतम अवधि 12 महीने से लेकर तीन साल की है। यूएसएम रहने-खाने के लिए स्टैंडर्ड मासिक अलाउंस मुहैया कराएगा। यह फेलोशिप सिर्फ नेचुरल साइंसेज के छात्रों को दिया जाएगी।

आवेदन की अंतिम तिथिः 15 सितम्बर, 2013

योग्यता

- अभ्यर्थी विकासशील देश का हो।
- उसके पास मलयेशिया या किसी दूसरे विकासशील देशों का अस्थायी या स्थायी वीजा न हो।
- नेचुरल साइंस के जुड़े विषय में पीएचडी डिग्री हो।
- पीएचडी डिग्री हासिल करने के पांच साल के भीतर ही अभ्यर्थी इस फेलोशिप के लिए आवेदन कर सकता है।
- विकासशील देशों में (मलयेशिया को छोड़कर) अभ्यर्थी स्थायी नौकरी कर रहा हो और वहां वह रिसर्च असाइनमेंट से जुड़ा हो।

आवेदन

अभ्यर्थी को आवेदन यूएसएम डिपार्टमेंट में जमा करना होगा। साथ ही, उन्हें रिफ्रेंस लेटर भी जमा करना होगा।

अधिक जानकारी के लिए क्लिक करें :
twas.ictp.it/prog/exchange/fells/fells-pdoc/usm-pdoc

न्यूकैसल यूनिवर्सिटी स्कॉलरशिप

जिन छात्रों का सपना ब्रिटेन में उच्च शिक्षा ग्रहण करने का है लेकिन पैसे की तंगी के कारण अपने सपनों को साकार करने में सक्षम नहीं हैं, वे ब्रिटेन स्थित न्यूकैसल यूनिवर्सिटी में एडमिशन ले सकते हैं क्योंकि यहां छात्रों के लिए कई स्कॉलरशिप उपलब्ध हैं। यहां पोस्ट ग्रेजुएट डिग्री के छात्रों को स्कॉलरशिप के तौर पर 2,000 पौंड की मदद दी जाएगी। अंग्रेजी में अच्छे स्कोर एवं मेरिट के आधार पर अंतरराष्ट्रीय विद्यार्थियों को 500 पौंड की आर्थिक मदद दी जाती है। इसके अलावा, दूसरे विषयों के छात्रों को 1,000 से 1,500 पौंड की छात्रवृति प्रदान की जाती है। यूनिवर्सिटी ने इस साल आर्किटेक्चर, कम्युनिकेशन, लॉजिस्टिक्स, एग्रीकल्चर और बायोमेडिसिन में छह नए पोस्ट ग्रेजुएट एवं रिसर्च प्रोग्राम की भी घोषणा की है जिसे 12 महीने में पूरा किया जा सकता है। अगर किसी आवेदक की प्रथम भाषा अंग्रेजी नहीं है तो उन्हें इसके लिए आईईएलटीएस परीक्षा देनी होगी। पाठ्यक्रम की जरूरत के अनुसार अंक प्राप्त करने होंगे। अधिक जानकारी के लिए क्लिक करें-

www.ncl.ac.uk/international/finance/scholarships.htm

■

सकारात्मक सोच जरूरी : सुनिधि

सक्सेस मंत्रा

प्रसिद्ध पार्श्व गायिका सुनिधि चौहान ने गायन की शुरुआत चार वर्ष की उम्र में ही कर ली थी। उन्हें अब तक कई फिल्मफेयर पुरस्कार, स्टार ग्रीन अवार्ड, आइफा अवार्ड और जी सिने अवार्ड मिल चुके हैं। अपने करियर और कामयाबी के सफर के बारे में वे बताती हैं-

1 मेरा बचपन, परिवार और करियर

मैं दिल्ली में पैदा हुई। कम उम्र से ही गाने का शौक था जिसे मेरे मम्मी-पापा ने समझा और मेरे टैलेंट को प्रोत्साहित किया। मेरा करियर बहुत अच्छा बने, मैं एक सफल गायिका बनूं, इसके लिए उन्होंने दिल्ली शहर तक छोड़ दिया और 1995 में हम लोग मुंबई शिफ्ट हो गए। उस समय मेरी उम्र 11 साल थी। मैंने पूरा ध्यान अपने लक्ष्य पर टिका दिया था।

2 पहला ब्रेक और लताजी से मुलाकात

मैं 1994 में फिल्म 'शस्त्र' के लिए गा चुकी थी। उसके बाद मैंने कुछ और गाने भी गाए थे। उसके बाद प्रतियोगिता 'मेरी आवाज सुनो' में भाग लिया। मुझे पता था कि यदि मैं जीत गयी तो मुझे लताजी से मिलने का मौका मिलेगा। मैंने अपनी ओर से पूरी मेहनत की और मैं जीत गई। लताजी एकदम सामने आकर खड़ी हुईं। उन्होंने मुझे बहुत प्यार से ट्रॉफी दी, मेरे आंसू पोंछे और कहा कि किसी भी चीज की कमी हो तो मुझे बताना। मैं क्या कहती, मेरे लिए तो जैसे भाग्य के दरवाजे खुल गए। मेहनत कभी खाली नहीं जाती, यह मैंने समझा।

3 कोई सपना नहीं देखा, बस अच्छा गाना है

बेशक, मैं बचपन से गा रही थी लेकिन ऐसा कोई सपना नहीं था कि मैं यह बनूं या वह बनूं। बस, गाने का शौक था, इसलिए गाती थी। मैं कब सिंगर बन गई, पता ही नहीं चला। लेकिन हां, यह जरूर है कि जब मैंने पहली बार फिल्म 'शस्त्र' में गाना गया तब जरूर इस बात का अहसास हुआ कि नहीं, केवल शौकिया नहीं गाना। अब यही मेरी मंजिल है। मुझे अब बहुत अच्छा गाना है।

4 संगीत को लिया गंभीरता से

संगीत ही मेरी मंजिल है। जब मुझे इस बात का अहसास हुआ तो मैं संगीत को बहुत गंभीरता से लेती चली गई और आज यह मेरा पेशा बन गया है।

5 कुछ नया करने का सपना

पहले बेशक, मैंने अपने लिए कोई सपना नहीं देखा। लेकिन अब मेरा सपना है कि हमेशा कुछ नया करूं। कुछ ऐसी चीजें करूं जो इस क्षेत्र में पहले कभी नहीं हुई। अब यही मेरी कोशिश रहती है।

6 सपने साकार करने हैं तो मेहनत जरूरी

मेहनती मैं बचपन से रही हूं। चाहे गाने याद करने के लिए या फिर उसे अच्छे से गाने के लिए, मैं खूब मेहनत से गाने तैयार करती थी। अब जबकि मैं सपने देखने लगी हूं तो ज्यादा मेहनत कर रही हूं। यह सच है कि मेहनत ही वह रास्ता है जिससे इंसान अपने सपनों को हकीकत में बदल सकता है।

7 मेरे पापा मेरे गॉड फादर

मेरे पापा मेरे गॉड फादर हैं। वे मेरे लिए सबकुछ हैं। आज मैं जो कुछ भी हूं पापा की वजह से ही हूं। जब मैंने अपना करियर शुरू किया, उस समय मैं बच्ची थी। गाना गाने के अलावा कुछ नहीं जानती थी। ऐसे में, मेरे हिस्से का संघर्ष मेरे पापा ने किया। उन्होंने मेरा करियर बनाने में जितनी मेहनत की है, शायद ही किसी और ने की हो। वे ही जा-जाकर म्यूजिक डायरेक्टर्स से मिलते थे। इसलिए मैं इस बात को बहुत ईमानदारी से स्वीकार करती हूं किमाता-पिता के सहयोग से ही बच्चों के संघर्ष का रास्ता आसान हो जाता है। इसलिए मैं तो हर माता-पिता से कहना चाहूंगी कि जो आपका बच्चा बनना चाहता है उसके रास्ते को आसान करने के लिए आप उसे सहयोग करें।

8 कोशिश हर समस्या का हल

हर इंसान की तरह मेरी जिंदगी में भी बहुत मुश्किलें आईं। कई उतार-चढ़ाव से मेरी जिंदगी गुजरी है। लेकिन जब मुश्किलें आईं तो मैंने उन्हें अच्छे से समझा और उन मुश्किलों को दूर करने की कोशिश भी की। जब कोशिश की तो मुश्किलें दूर हो गईं। जिंदगी में फिर से खुशियां आ गईं और जिंदगी फिर से खूबसूरत लगने लगी। उतार-चढ़ाव हर इंसान की जिंदगी में आते हैं। मैं तो यही कहूंगी कि मेरी जिंदगी में तो कम आए हैं। आप अखबार उठाकर देखें, टीवी खोलें, कैसी-कैसी खबरें आती हैं। लोगों की जिंदगी तबाह हो जाती है। फिर भी लोग जीते हैं। कई लोगों के हाथ-पैर नहीं होते, वे फिर भी उठते हैं, जीवन को आगे बढ़ाते हैं और मिसाल बनते हैं।

9 सकारात्मक सोच है जरूरी

यदि जिंदगी को आप सकारात्मक सोच के साथ स्वीकार करोगे तो हमेशा खुश और सफल रहोगे। सकारात्मक सोचने से दिल और दिमाग सही रास्ते पर चलते हैं। मैं बहुत ही सकारात्मक इंसान हूं इसलिए कठिन दौर में भी मैं घबराई नहीं। मैंने खुद को टूटने नहीं दिया। चूंकि मैं इस सच को जानती हूं कि जिंदगी में चढ़ाव है तो उतार भी है, खुशी है तो दुख भी है। सफलता है तो कभी असफलता भी है। इसलिए जब लगे कि असफलता हाथ लगी है तो फिर से सफल होने के लिए मेहनत करो, देखो आपको फिर सफलता मिल जाएगी। बस आप सकारात्मक बने रहें।

10 आत्मविश्वास और जिद जरूरी

मेरे अंदर बचपन से आत्मविश्वास कूट-कूट कर भरा था। मैं बचपन से ही कई लोगों के सामने बहुत सहजता से गाने गा लिया करती थी। मेरा यह आत्मविश्वास हमेशा मेरे लिए वरदान साबित हुआ है। दूसरा, मैं बहुत जिद्दी भी रही हूं। मेरी जिद अब भी कुछ नया और कुछ अच्छा कर दिखाने की है।

■ प्र. रेणु खंतवाल